**7. पशु प्रजनन :** प्रजनन योग्य पशुओं को गर्भित करवाने के लिये कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को प्राथमिकता दें क्योंकि सांड़ द्वारा प्रजनन से जनन अंगों की बीमारी फैल सकती है जबकि कृत्रिम गर्भाधान द्वारा अति उत्तम प्रजाति के सांड़ के वीर्य से नस्ल सुधार होता है एवं बीमारी नही फैलती है। गाय एवं भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान हेतु निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये –

- गाय अथवा भैंस के गर्मी में आने पर इसकी सूचना निकटतम कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता को तुरन्त देनी चाहिये।
- भैंसों में मुर्रा सांड़ के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिये।
- पर्वतीय क्षेत्र की देशी गायों में जर्सी सांड़ एवं मैदानी क्षेत्र की देशी गायों में होलस्टिन फ्रिजियन के सांड़ के वीय से कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिये।
- संकर नस्ल की गायों में संकर नस्ल के सांड़ के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिये, इससे उत्पन्न वत्स में विदेशी एवं देशी रक्त का प्रतिशत 50–50 प्रतिशत रहता है जिससे कि उसकी उत्पादन क्षमता अधिक होती है एवं स्थानीय वातावरण के प्रति सहनशीलता भी अधिक रहती है। उदाहरण के लिये यदि पशुपालक के पास संकर नस्ल की जर्सी गाय है तो कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता से इसको संकर नस्ल के जर्सी सांड़ के वीर्य से गर्भित करवाना चाहिये।

**7.1.1 पशुओं के गर्मी में आने के लक्षण :**

- बार–बार रंभाना।
- पूंछ उठाना।
- प्रजनन अंगों में सूजन और अधिक रक्त प्रवाह के कारण गुलाबी–लाल रंग।
- प्रजनन अंगों से गाढ़े चिपचिपे और पारदर्शी द्रव का निकलना।
- बार–बार पेशाब करना।
- खुराक और दूध का कम होना।
- पशु का बेचैन होना, दूसरे जानवरों को सूंघना और उन पर चढ़ना।
- गर्मी में आने के 12–14 घंटे के बाद पशु का सांड़ या अन्य पशु के सामने जाकर खड़ा होना और उसे अपने ऊपर चढ़ने देना। यह गर्भाधान का सर्वाधिक उपयुक्त समय होता है।

**7.1.2 सुझाव :**

- गर्मी में आने के 12–14 घंटे बाद ही कृत्रिम गर्भाधान अथवा प्राकृतिक गर्भाधान कराना चाहिये। यदि पशु गाभिन नहीं हुआ है तो वह 21 दिन बाद पुन: गर्मी में आयेगा।
- पशु लगभग 21 दिन के अंतर पर पुन: गर्मी में आता है। अत: 21 दिन बाद गर्मी के लक्षणों का फिर से निरीक्षण करना चाहिये, विशेषत: सुबह और शाम के समय।
- भैसों में विशेष ध्यान देना चाहिये क्योंकि उन में गर्मी के लक्षण अधिक स्पष्ट नहीं होते हैं।

**7.2.1 कृत्रिम गर्भाधान के लाभ :**

- जब गाय/भैंस गर्मी में होती है, तब सांड़ को ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती। प्रशिक्षित कृत्रिम वीर्यदानकर्ता (इनसेमिनेटर) उन्नत सांड़ के उच्च गुणवत्तायुक्त वीर्य से पशु को गर्भित कर देता है।
- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा एक सांड़ से अनेक पशुओं को गर्भित कराया जा सकता है। अतः उन्नत साड़ों का चयन सम्भव हो पाता है।
- पशुओं की नस्ल में तेजी से सुधार होता है।
- कृत्रिम गर्भाधान से प्रजनन सम्बन्धी बीमारियों को फैलने से रोका जा सकता है।
- कृत्रिम गर्भाधान कराते समय जननांगो की बीमारियों का भी पता लग जाता है।
- यह तकनीक सस्ती भी है।

**7.2.2 सुझाव :**

- पशु को कृत्रिम गर्भाधान कराने के 21 दिन बाद गर्मी के लक्षणों का पुनः निरीक्षण करना चाहिये।
- कृत्रिम गर्भाधान कराने के 90 दिन बाद गर्भ परीक्षण भी करवाना चाहिये।
- तीन बार गर्भाधान कराने के बाद भी यदि गर्भ नहीं ठहरता है तो पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिये।